पक्षधर

13

संस्थापक : दूधनाथ सिंह : 1975

पक्षधर

प्रतिरोध की संस्कृति का रचनात्मक हस्तक्षेप

अंक : **13** जुलाई, 2012

संपादक

विनोद तिवारी

सहायक संपादक

तेजभान

अक्षर संयोजन

कॉम्पैक्ट प्रिन्टर्स
ई-17, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32
आवरण : तैल चित्र : दाउ एण्ड दाउ (तू ही तू)/ हेमराज (कुमार अनुपम के सौजन्य से)

मूल्य

एक प्रति : 50 रुपये

सदस्यता

चार अंकों के लिए : 200 रुपये
संस्थाओं के लिए : 300 रुपये
पंचवार्षिक : 500 रुपये
दस वार्षिक : 1000 रुपये
आजीवन : 2500 रुपये

संपादन/प्रकाशन : अवैतनिक/अव्यावसायिक

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक विनोद तिवारी, बी-2, तीसरी मंजिल, महेन्द्रू एन्क्लेव, स्टेडियम रोड, दिल्ली-110033 के लिए दिव्या ऑफसेट प्रिन्टर्स, बी-1422, न्यू अशोक नगर, मयूर विहार, दिल्ली-96 से प्रकाशित और मुद्रित।

प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। संपादक और लेखक की अनुमति के बिना प्रकाशित सामग्री के किसी भी तरह के उपयोग की अनुमति नहीं होगी।

सम्पर्क

बी-2, तीसरी मंजिल, महेन्द्रू एन्क्लेव
स्टेडियम रोड, दिल्ली-110033
फ़ोन : 011-27240496
मो. : 09560236569
ई-मेल : pakshdharwarta@gmail.com

PAKSHDHAR
A Literary bi-annual Magazine
Editor : Vinod Tiwari
Language : Hindi

ISSN : 2231-1173

अनुक्रम

सम्पादकीय

साहित्यिक पत्रकारिता का वर्तमान 5

एक कवि : एक राग

राजेश जोशी की कविताएँ 9

व्याख्यान

उदार लोकतन्त्र : कुछ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य/ **हरबंस मुखिया** 20

विशेष

दो कहानियाँ/ **चन्दन पाण्डेय** 29

धरोहर

विष्णु प्रभाकर के पत्र/ **रामशंकर द्विवेदी** 35

कहानी

ब्लेड/ **श्रीकांत दूबे** 51

मुक्ति दंश/ **ज्योति कुमारी** 56

स्मृति-शेष

कविता एक प्रति संसार की रचना करती है/
भगवत रावत से आशीष त्रिपाठी की बातचीत 65

आलेख

मार्क्सवाद का प्रेत : निवारण के उपाय/ **याक दरीदा** 97

भारत में भाषायी अस्मिता का आरम्भ और विकास/ **बसंत त्रिपाठी** 121

मार्क्सवाद और हिन्दी दलित आत्मकथाएँ/ **जितेन्द्र विसारिया** 133

किस्से-कहानियों में हैं जिनके घर/ **अतुल कुमार सिंह** 140

कविता

छः कविताएँ/ **मनोज कुमार झा** 151

दो लम्बी कविताएँ/ **कुमार अनुपम** 154

तीन कविताएँ/ **वंदना शर्मा** 169

तीन कविताएँ/ **अशोक गुप्ता** 173

साहित्य का नोबेल

कल्पना और यथार्थ के अप्रतिम कथाकार मो येन/ **अनिल राय** 180

पुनर्पाठ

अप्रकट करुणा के पक्ष में : ही भी किन्तु परन्तु रंगनाथ/ **हिमांशु पंड्या** 185

पुस्तक समीक्षा

भुवनेश्वर समग्र : एक बेचैन जीनियस.../ **विवेक श्रीवास्तव** 199

भूमंडलीकरण बनाम राष्ट्र-राज्य का यथार्थ/ **अरुणेश शुक्ल** 204

फरेबी इश्क की दास्तान : चन्दन पांडेय की कहानियाँ/ **प्रेमशंकर सिंह** 213

स्त्री मुक्ति का पक्ष : इस उस मोड़ पर/ **समीर कुमार पाठक** 217

गीतांजलि के हिन्दी अनुवाद/ **जय कौशल** 221

साहित्यिक पत्रकारिता का वर्तमान

कहा जाता है कि साहित्य के निर्माण और विकास में साहित्यिक-वातावरण का एक विशेष महत्व होता है। साहित्यिक-वातावरण जैसा होगा उस समय का साहित्य भी वैसा ही होगा। किसी भी देश और समाज में सहित्यिक-वातावरण का निर्माण करने वाले कारकों में साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका निस्संदेह नेतृत्वकारी होती है। एक ओर पत्र-पत्रिकाएँ जहाँ साहित्यिक-वातावरण को बनाने और प्रचारित-प्रसारित करने का काम करती रही हैं तो दूसरी ओर उसे अनुशासित भी करती रही हैं। शुरू से ही साहित्यिक पत्रकारिता यह दोहरी भूमिका निभाती रही है। पर, इस समय यह सवाल है कि वर्तमान साहित्यिक पत्रकारिता कौन-सी भूमिका में है? साहित्यिक पत्रकारिता का वर्तमान क्या है? नवजागरण के दौर में साहित्यिक पत्रकारिता एक मिशन की तरह काम कर रही थी। आजादी के बाद शीत-युद्ध के जमाने में साहित्यिक-वातावरण साफ-साफ दो खेमों में बँटा हुआ था। साहित्यिक पत्रकारिता के मोर्चे दोनों खेमों की ओर से खुले हुए थे। बहस-मुबाहिसे, वाद-विवाद, सहमति-असहमति को एक चुनौती की तरह लिया जाता था। साहित्यिक और क्रियाशील दौर था। उसके बाद आपातकाल का दौर आता है जो कि निस्संदेह एक दृष्टि से पत्रकारिता के लिए निर्भीक साहसिकता का दौर था तो दूसरी दृष्टि से एक स्याह और संदेहकारी दौर। लघु-पत्रिका आंदोलन ने साहित्यिक पत्रकारिता के लिए नए तरह के अवसर पैदा किए। सांस्थानिक वर्चस्व और फायदे-नुकसान वाली पत्रकारिता से अलग एक जनतांत्रिक-स्व और रुझान के साथ सामूहिक सहकार के जज्बे वाली पहलकदमी। पर धीरे-धीरे यह दौरा-दौर खत्म हुआ। जो साहित्यिक बहस-मुबाहिसे का वातावरण बना था वह वातावरण कहाँ गया? सहमति-असहमति के जो सामानांतर मंच थे वे मंच कहाँ चले गए? कहीं ऐसा तो नहीं कि सहमति-असहमति का झगड़ा ही खत्म हो गया। तुम सहमत हो तो हम भी तुमसे सहमत हैं, तुम असहमत हो ठेंगे से। तुम अपने घर दाल-रोटी खाओ हम अपने घर। आज साहित्यिक पत्रकारिता की दिशा क्या है? उसका लक्ष्य क्या है? इस पर कुछ कहना